एआई के प्रभाव स्वरूप भाषा और साहित्य में बदलाव

डॉ हर्षलता पण्ड्या, सहायक आचार्य, शिक्षा सकाय, गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर
Email- harshapandya571@gmail.com

सारांश

एआई ही तो है, जो देता है, हमें नई तकनीक।
कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर हमें गर्व है।
इससे उजाला मिला हमें,
जिससे जीवन की राहे हुई स्पष्ट।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), जिसे हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नाम से जानते हैं, यह विज्ञान और तकनीक का एक ऐसा क्षेत्र है, जो मशीनों को इसान की तरह सोचने और समझने की क्षमता प्रदान करता है। यह एक आधुनिक तकनीक है। जॉन मैकार्थी (स्टैडफोर्ट में कप्यूटर विज्ञान के एक सेवानिवृत प्रोपोसर) को एआई का जनक माना जाताहै। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन के बाद भाषा एवं साहित्य की दुनिया भी बड़े बदलावों से साक्षात्कार हुआ। लेखकों द्वारा विषयों के चयन या पुस्तक की परिकल्पना से लेकर रचना के पाठक तक वितरित होने तक की पूरी प्रक्रिया में एआई की भूमिका हो रही है। एआई भाषा के स्थाई भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 नाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम विलुप्त होने वाली इन सभी भाषाओं को सुरक्षित देखना चाहते है तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। यह प्रौद्योगिकी भाषा के बीच दूरियां समाप्त करने में सक्षम है। आज हमारे मस्तिष्क में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि भाषा एवं साहित्य के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्या प्रासंगिकता है? और यह भाषा के भविष्य को किस तरह बदलाव कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें विभिन्न भाषाओं की चुनौतियों अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। एआई का प्रभाव लेखन के दायरे से आगे बढ़कर पढ़ने के अनुभव में भी बदलता है. एआई संचालित अनुशसा एरुगोरियम पाठक की पिछली प्राथमिकताओं और मशियों के आधार पर व्यक्तिगत पठन सूची सुझाने में तेजी से कुशल होती जा रही है. यह उन पाठकों के लिए एक वरदान हो सकता है, जो नई और रोमांचक पुस्तकों की खोज करना चाहते हैं क्योंकि एआई साहित्य के विशाल सागर में गहराई से जा सकता है. छुपे हुए रत्नों और विशिष्ट शैलियों की पहचान कर सकता है. जो अन्यथा किसी का ध्यान नहीं जा सकता था। इसके अतिरिक्त पात्रों, कथानक बिंदुओं और ऐतिहासिक संदर्भों के बारे में पाठकों के सवालों के जवाब देने के लिए एआई संचालित चेटबोर्ड और वर्चुअल अस्सिटेंट विकसित किये जा रहे हैं। जो संभावित रूप से पाठक की समझ और पाठ के साथ जुड़ाव को बढ़ाते हैं जैसे-जैसे एआई तकनीक विकसित होती जा रही है, साहित्य में इसकी भूमिका और भी अधिक प्रमुख होती जा रही है। यह उनके लिए नए रचनात्मक रास्ते तलाशने में विभिन्न शैलियों के साथ प्रयोग करने और संभावित रूप से एआई संचालित अनुशसा उपकरणों के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने का अवसर प्रस्तुत करता है। साहित्य का भविष्य संभवतः एक सहयोगी दृष्टिकोण से आकार ले रहा है, जहां एआई मानव रचनात्मकता को पूरक की और बढ़ाता है. एक गतिशील और निरंतर होने वाले साहित्यिक परिदृश्य को बढ़ावा देता है। हमारी भाषा अपने दौर के इन आधुनिक अनुप्रयोगों को आशंका. उपेक्षा घृणा की दृष्टि से ना देखें. बल्कि उनके प्रति खुला दृष्टिकोण रखेंगे, तो निश्चित ही एआई द्वारा भाषा एवं साहित्य में बदलाव होगा।